# पुरुषार्थी-जीवन

[ संसार के महापुरुषों का चरित्र-चित्रण ]

लेखक

श्री व्यथित हृदय

प्रकाशक —



प्रकाशक—

ए० मुकर्जी,
नेशनल लिटरेचर कम्पनी
१०५, काटन स्ट्रीट,
कलकत्ता।

प्रथम बार
१९४१
मूल्य—१)

मुद्रक
चुन्नीचन्द्र परवार
जवाहिर प्रेस
१६१।१ हरिसन रोड
कलकत्ता।

# भूमिका

हिन्दीके लेखकोंमें श्रीव्यथित हृदयजीका अपना एक खास स्थान है। इनकी लेखनीमें जो प्रवाह और ओज है, उसका अनुभव पाठकको इनकी रचनाकी कुछ पंक्तियां पढ़ते ही होने लगता है। ये भावना-प्रधान लेखक हैं, न कुछ चीज़में भी ये अथाह रस पैदा कर देते हैं। ये उन लेखकोंमें हैं, जो सम्पन्नोंकी कृपाकी परवा न करके केवल अपनी लेखनीके बलपर जीवित रहना चाहते हैं। यह मार्ग सरल-साध्य नहीं है। बड़े-बड़े दिग्गज इस मार्गपर आगे बढ़नेमें असमर्थ सिद्ध हुए हैं और विवश होकर पीछे लौटे हैं। अनेक कठिनाइयोंका सामना करते हुए भी ये अपने इस साधना और तपस्याके मार्गपर अविचलित बढ़े चले आ रहे हैं।

श्रीव्यथित हृदयने सैकड़ों पुस्तकें लिखी हैं। हिन्दीके पाठक इनसे परिचित हैं। इनकी पुस्तकोंके लिये भूमिकाकी जरूरत नहीं। और, फिर कोई अन्य व्यक्ति लिखे इसकी तो और भी ज़रूरत नहीं। यह जानते हुए भी मैं इस पुस्तककी भूमिका लिखनेके लिये उद्यत हुआ हूं। इनकी भक्ति यही है।

इस पुस्तकमें उन्होंने देश-विदेशके उन पुरुषार्थी महापुरुषोंका चरित अंकित किया है, जिन्होंने अपने-अपने देशोंके राष्ट्रीय-जीवनमें नई जान फूंकी है। महात्मा गान्धी, लेनिन,

मुस्तफाकमाल, डिवेलरा, सनयातसेन आदि ऐसे ही महापुरुष हैं। इन समस्त शक्तिशाली आत्माओंका श्रीव्यथित हृदयने अपने यशके अनुरूप ही चित्रण किया है। पुस्तक पढ़िये तो जान पड़ता है जैसे कोई महाकाव्य पढ़ रहे हैं। ज़रा इन पंक्तियोंपर ध्यान दीजिये —

"वह साधन और सम्बलहीन होनेपर भी अपनी सूखी-सूखी हड्डियोंमें पुरुषार्थकी महाशक्ति छिपाये हुए सफलताकी ओर दौड़ा जा रहा है, और दौड़ा जा रहा है ऐसी स्थितिमें जब कि तोपें उसका मार्ग रोककर खड़ी हैं। और बम बिखरे हुये हैं, उसके मार्गमें दानोंके सदृश, वह तोपोंका मुंह बन्द कर देना चाहता है और बना देना चाहता है मानों बिखरे हुए बमोंको पथका फूल।"

इन पंक्तियोंमें कैसा प्रवाह है, कैसा रस है और कैसी भावुकता है? थोड़ेसे नपे-तुले वाक्योंमें महात्मा गान्धीकी क्या सच्ची तस्वीर खींची है। भाषाका यही मज़ा, कल्पनाकी यही उड़ान, रसका यही प्रवाह अन्ततक कायम है।

निश्चय यह पुस्तक तरुण भारतीयोंमें नवस्फूर्ति भरनेमें सहायक होगी और जो इसे पढ़ेंगे, वे इसपर मुग्ध हुये बिना न रहेंगे।

'दीदी' कार्यालय
प्रयाग
१८-७-४१

—श्रीनाथ सिंह

# विषय-सूची

## खाली बोतल

यह श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कलापूर्ण कहानियोंका नवीनतम संग्रह है। कहानियां पाठक के हृदय पर एक अमर छाप लगा देती हैं।

पुस्तक सजिल्द, मूल्य केवल—१)

## छाया में

श्री 'पहाड़ी' की मनोवैज्ञानिक कहानियों का एक अनूठा संग्रह है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जितनी सरसता और सरलतासे करते हैं, बस यह उनकी कृति पढ़नेसे ही विदित होता है। पुस्तक सजिल्द, मूल्य—१)

## पड़ोसी

प्रेमचन्दजी के पश्चात् यदि ग्राम-जीवनके चित्रणमें कोई सफल हुआ है तो वह ठाकुर श्रीनाथसिंह हैं। 'पड़ोसी' की कहानियों में यथार्थ-वाद और आदर्श-वादका इतना सफल समिश्रण हुआ है कि ग्राम्य-जीवनके सफेद और काले अंगोंका चित्रण तथा पथ-प्रदर्शन आप एक साथ ही होता जाता है।

सजिल्द पुस्तक का मूल्य—१।)

## महावर

श्रीमती उषादेवी मित्राकी सामयिक उत्कृष्ट कहानियोंका संग्रह है। कहानियां सरसता, मनोहरता और सामयिक-संदेश का वाहन करती हैं।

सजिल्द पुस्तक का मूल्य—१)

## पथचारी

मानसिक उत्थान-पतन, जीवनके द्वन्द्वोंका चित्रण 'पथचारी' में अद्भुतीय ढंगसे हुआ है। उपन्यासमें पात्रोंका चरित्र-चित्रण और कथनोपकथन संक्षिप्त और परिष्कृत है। 'पथचारी' उषादेवी मित्राकी श्रेष्ठतम् कृति मानी जाती है।

सजिल्द पुस्तक का मूल्य—१।)

## मय्या अकिल बहादुर

हास्यरसावतार श्री जी० पी० श्रीवास्तवने मय्या अकिल बहादुर के द्वारा हिन्दुस्तानके प्रमुख नगरोंका ऐसा सुन्दर भ्रमण कराया है कि एक ढेले से दो चिड़ियाँ चित्त आती हैं। 'हलचल' का तो यहाँ तक कहना है कि, "पुस्तक क्या है, हास्यरसका 'शायर-बाग' है। भीनो-भीनो फुहार लेते जी नहीं भरता।"
सजिल्द पुस्तक का मूल्य—१)

## वीर-गाथा

आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री की ओजमयी कृति जिसमें आन और धर्म पर मर-मिटनेवाला वीरत्व है। शास्त्रीजी की लेखनीमें ओज है, भाषामें अधिकार कर लेनेकी शक्ति है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य—१।)

## ललिता

श्री यज्ञदत्त शर्मा एम० ए० का प्रगति-शील-सामाजिक उपन्यास जिसमें प्रेम-प्रणय और कर्तव्यका अमर द्वन्द्व है। उपन्यास-साहित्यमें यह एक नवीनताकी ओर इशारा करता है। मूल्य—१)

## राजर्षि

श्रीयुत् सरयूप्रसाद पाण्डेय रचित एक ऐतिहासिक-खण्ड काव्य है। संस्कृतके रघुवंशका माधुर्य लेकर 'राजर्षि' हिन्दी-साहित्यमें आया है। प्राचीन और अर्वाचीनका अनूठा सामञ्जस्य इस काव्यमें है। हिन्दीमें इसकी टक्करके खण्ड-काव्य विरले हैं। मूल्य केवल—॥।)

मिलने का पता:—

**नेशनल लिटरेचर कम्पनी,**

**१०५, कटन स्ट्रीट, कलकत्ता।**

# महात्मा गांधी



## १

एक साधारण पिताका एक साधारण पुत्र ! वही पुत्र, जो आज समस्त संसारका सिर मुकुट बना हुआ है, और जो जगत्‌की मानवताको एक नूतन संदेश दे रहा है। उसके संदेशको सुनकर, उसके जीवन-गानको दुहराकर आज संसारके बहुतसे मनुष्य धन्य बन गये हैं, जीवनकी वास्तविकताको समझने लगे हैं। वह भारत माताकी सूनी गोदका वैभव है, और वैभव है समस्त संसारका। कई सदियोंसे मानवताका ऐसा अमूल्य वैभव, ऐसा नर-रत्न पृथ्वीपर न दिखाई पड़ा था। वह उतरा है गीताका सन्देश लेकर ! उसकी रग-रगमें अहिंसाका भाव है। मानव-